छन्दशास्त्रम्

Of Acharya pingala

छन्दशास्त्रम्

Of

Acharya Pingala

Edited by

asit k panja

aarsha, jaipur

Plot no. 4, Khandelwal nagar Extn,
Near Premnagar pulia, Agra Road,
Jaipur- 302031, Rajasthan

www.ayurvedah.in

Publisher : **aarsha**

Edition : **First; June 2015**

ISBN :

Price : **FREE**

Composing and editing: **bapan neogi**

Cover page: **Rajarshi**

For any information, feedback and requirement of this book, please mail to :

aarshaayurveda@gmail.com www.ayurvedah.in

Published by **bapan neogi** on behalf of **aarsha** ,

aarsha, jaipur
Plot no. 4, Khandelwal nagar Extn,
Near Premnagar pulia, Agra Road,
Jaipur- 302031, Rajasthan

www.ayurvedah.in

छन्दशास्त्रम्

म-य-र-स-त-ज-भ-न-ल-ग-संमितं भ्रमति वाङ्मयं जगति यस्य।

स जयति पिङ्गलनागः शिवप्रसादाद्विशुद्धमतिः।।

त्रिगुरुं विद्धिमकारं लघ्वादिसमन्वितं यकाराख्यम्।

लघुमध्यमं तुरेफं सकारमन्ते गुरुनिबद्धम्।।

लघ्वन्त्यं हितकारं जकारमुभयोर्लघुं विजानीयात्।

आदिगुरुं च भकारं नकारमिह पैङ्गले त्रिलघुम्।।

दीर्घं संयोगपरं तथा स्वरव्यञ्जनान्तमूष्मान्तम्।

सानुस्वारं च गुरुं क्वचिदवसानेऽपि लघ्वन्त्यम्।।

आदिमध्यावसानेषु य-र-ता यान्ति लाघवम्।

भ-ज-सा गौरवं यान्ति म-नौ तुगुरुलाघवम्।।

त्रिविरामं दशवर्षं षण्मात्रमुवाच पिङ्गलःसूत्रम्।

छन्दोवर्गपदार्थप्रत्ययहेतोश्च शास्त्रादौ॥।१.१।

संज्ञा-प्रकरणम्

धीश्रीस्त्री म्।२.१।

वरा सा य्।२.२।

का गुहा र्।२.३।

वसुधा स्।२.४।

सा ते क त्।२.५।

कदा स ज्।२.६।

किं वद भ्।२.७।

न हस न्।२.८।

गृ ल्।२.९।

गन्ते।२.१०।

ध्रादिपरः।२.११।

हे।२.१२।

लौ सः।२.१३।

ग्-लौ ।२.१४।

अष्टौ वसव इति॥।२.१५।

छन्दः।३.१।

गायत्री।३.२।

दैव्येकम्।३.३।

आसुरी पञ्चदश।३.४।

प्राजापत्याष्टौ।३.५।

यजुषां षट्।३.६।

साम्नां द्विः।३.७।

ऋचां त्रिः।३.८।

द्वौ द्वौ साम्नां वर्धेत।३.९।

त्रींस्त्रीनृचाम्।३.१०।

चतुरश्चतुरः प्राजापत्यायाः।३.११।

एकैकं शेषे।३.१२।

जह्यादासुरी।३.१३।

तान्युष्णिगनुष्टुब्बृहतीपंक्तित्रिष्टुब्जगत्यः।३.१४।

तिस्रस्तिस्रः सनाम्न्य एकैका ब्राह्म्यः।३.१५।

प्राग्यजुषामार्ष्य इति।।।३.१६।

पादः।४.१।

इयादिपूरणः।४.२।

गायत्र्या वसवः।४.३।

जगत्या आदित्याः।४.४।

विराजो दिशः।४.५।

त्रिष्टुभो रुद्राः।४.६।

एकद्वित्रिचतुष्पादुक्तपादम्।४.७।

आद्यं चतुष्पादृतुभिः।४.८।

क्वचित्त्रिपादृषिभिः।४.९।

सा पादनिचृत्।४.१०।

षड्कसप्तकयोर्मध्येऽष्टावतिपादनिचृत्।४.११।

द्वौ नवकौ षड्कश्च नागी।४.१२

विपरीता वाराही।४.१३।

षड्कसप्तकाष्टकैर्वर्धमाना।४.१४।

विपरीता प्रतिष्ठा।४.१५।

तृतीयं द्विपाज्जागतगायत्राभ्याम्।४.१६।

त्रिपात्त्रैष्टुभैः।४.१७।

उष्णिग्गायत्रौ जागतश्च।४.१८।

ककुम्मध्ये चेदन्त्यः।४.१९।

पुर उष्णिक्पुरः।।।४.२०।

परोष्णिक्परः।५.१।

चतुष्पाद्दृषिभिः।५.२।

अनुष्टुप्गायत्रैः।५.३।

त्रिपात्कचिज्जागताभ्यांच।५.४।

मध्येऽन्ते च।५.५।

बृहती जागतस्त्रयश्च गायत्राः।५.६।

पथ्या पूर्वश्चेत्तृतीयः।५.७।

न्यङ्कुसारिणी द्वितीयः।५.८।

स्कन्धोग्रीवी क्रौष्टुकेः।५.९।

उरोबृहती यास्कस्य।५.१०।

उपरिष्टाद्बृहत्यन्ते।५.११।

पुरस्ताद्बृहती पुरः।५.१२।

क्वचिन्नवकाश्चत्वारः।५.१३।

वैराजौ गायत्रौ च।५.१४।

त्रिभिर्जागतैर्महाबृहती।५.१५।

सतोबृहती ताण्डिनः।५.१६।

पंक्तिर्जागतौ गायत्रौ च।५.१७।

पूर्वौ चेदयुजौ सतःपंक्तिः।५.१८।

विपरीतौ च॥।५.१९।

आस्तारपंक्तिः परतः।६.१।

प्रस्तारपंक्तिः पुरतः।६.२।

विष्टारपंक्तिरन्तः।६.३।

संस्तारपंक्तिर्बहिः।६.४।

अक्षरपंक्तिः पञ्चकाश्चत्वारः।६.५।

द्वावप्यल्पशः।६.६।

पदपंक्तिः पञ्च।६.७।

चतुष्कषट्कौ त्रयश्च।६.८।

पथ्यापञ्चभिर्गायत्रैः।६.९।

जगती षड्भिः।६.१०।

एकेन त्रिष्टुप्ज्योतिष्मती।६.११।

तथा जगती।६.१२।

पुरस्ता ज्ज्योतिःप्रथमेन।६.१३।

मध्येज्योतिर्मध्यमेन।६.१४।

उपरिष्टाज्ज्योतिरन्त्येन।६.१५।

एकस्मिन्पञ्चके छन्दः शङ्कुमती।६.१६।

षट्के ककुद्मती।६.१७।

त्रिपादनिष्ठमध्या पिपीलिकमध्या।६.१८।

विपरीता यवमध्या।६.१९।

ऊनाधिकेनैकेन निचृद्भुरिजौ।६.२०।

द्वाभ्यां विराड्वराजौ।६.२१।

आदितः सन्दिग्धे॥।६.२२।

देवतादितश्च।७.१।

अग्निः सविता सोमो बृहस्पतिर्मित्रावरुणाविन्द्रो विश्वेदेवा देवताः।७.२।

स्वराः षड्जऋषभगान्धारमध्यमपञ्चमधैवतनिषादाः।७.३।

सितसारङ्गपिशङ्गकृष्णनीलल्लोहितगौरा वर्णाः।७.४।

आग्निवेश्यकाश्यपगौतमांगिरसभार्गवकौशिकवासिष्ठानि गोत्राणि।७.५।

श्यामान्यतिच्छन्दांसि।७.६।

रोचनाभाःकृतयः।७.७।

अनुक्तानां कामतो वर्णा इति।।।७.८।

---

www.ayu

चतुःशतमुत्कृतिः।८.१।

चतुरश्चतुरस्त्यजेदुत्कृतेः।८.२।

तान्यभिसंव्याप्रेभ्यः कृतिः।८.३।

प्रकृत्या चोपसर्गवर्जितः।८.४।

धृत्यष्टिशक्करीजगत्यः।८.५।

पृथक्पृथक्पूर्वत एतान्येवैषाम्।८.६।

द्वितीयं द्वितीयमतितः।८.७।

अथ लौकिकम्।८.८।

आत्रैष्टुभाच्च यदार्षम्।८.९।

पादश्चतुर्भागः।८.१०।

यथावृत्तसमाप्तिर्वा।८.११।

लः समुद्रा गणः।८.१२।

गौ गन्तमध्यादिर्न्लश्च।८.१३।

स्वरा अर्धं चार्यार्धम्।८.१४।

अत्रायुङ्नज्।८.१५।

षष्ठो ज्।८.१६।

न्-लौ वा।८.१७।

न्-लौ चेत्पदं द्वितीयादि।८.१८।

सप्तमः प्रथमादि।८.१९।

अन्त्ये पञ्चमः।।।८.२०।

षष्ठश्च ल्।९.१।

त्रिषु गणेषु पादः पथ्याद्ये च।९.२।

विपुलान्या।९.३।

चपला द्वितीयचतुर्थौ ग्, मध्ये जौ।९.४।

पूर्वे मुखपूर्वा।९.५।

जघनपूर्वेतरत्र।९.६।

उभयोर्महाचपला।९.७।

आद्यर्धसमा गीतिः।९.८।

अन्त्येनोपगीतिः।९.९।

उत्क्रमेणोद्गीतिः।९.१०।

अर्धे वसुगण आर्यागीतिः।९.११।

वैतालीयं द्विःस्वरा अयुक्पादे युग्वसवोन्ते र्ल्गाः।९.१२।

गौपच्छन्दसिकम्।९.१३।

आपातलिका भ्गौ ग्।९.१४।

शेषे परेण युङ्न साकम्।९.१५।

षड्वामिश्रा युजि।९.१६।

पञ्चमेन पूर्वःसाकं प्राच्यवृत्तिः।९.१७।

अयुक्तृतीयेनोदीच्यवृत्तिः।९.१८।

आभ्यां युगपत्प्रवृत्तकम्।९.१९।

अयुक्कारुहासिनी॥।९.२०।

युगपरान्तिका।१०.१।

गन्ता द्विर्वसवो मात्रासमकं ल् नवमः।१०.२।

द्वादशश्च वानवासिका।१०.३।

विश्लोकः पञ्चमाष्टमौ।१०.४।

चित्रा नवमश्च।१०.५।

परयुक्तेनोपचित्रा।१०.६।

एभिः पादाकुलकम्।१०.७।

गीत्यार्या लः।१०.८।

शिखा विपर्यस्तार्धा।१०.९।

लः पूर्वश्चेज्ज्योतिः।१०.१०।

गश्चेत्सौम्या।१०.११।

चूलिकैकान्नत्रिंशदेकत्रिंशदन्ते ग्।१०.१२।

सा ग् येन न समा लां ग्ल इति।।।१०.१३।

वृत्तम्।११.१।

सममर्धसमं विषमं च।११.२।

समं तावत्कृत्वः कृतमर्धसमम् ।११.३।

विषमं च ॥

राश्यूनम्।११.४।

ग्लिति समानी।११.५।

ल्गिति प्रमाणी।११.६।

वितानमन्यत्।११.७।

पादस्यानुष्टुब्वक्रम् ।११.८।

न प्रथमात्त्रौ।११.९।

द्वितीयचतुर्थयोरश्च।११.१०।

वान्यत्।११.११।

यच्चतुर्थात्।११.१२

पथ्या युजो ज्।११.१३।

विपरीतैकीयम्।११.१४।

चपलायुजो न्।११.१५।

विपुला युग्लः सप्तमः।११.१६।

सर्वतः सैतवस्य।११.१७।

भ्रौ न्तौ च।११.१८।

प्रतिपादं चतुर्वृध्या पदचतुरूर्ध्वम्।११.१९।

गावन्त आपीडः।।।११.२०।

गावादौ चेत्प्रत्यापीडः।१२.१।

प्रत्यापीडो गावादौ च।१२.२।

प्रथमस्य विपर्यासे मञ्जरीलवल्यमृतधाराः।१२.३।

उद्गतामेकतः स्जौ स्लौ, न्सौ ज्गौ, भ्नौ ज्लौ ग्, स्जौ स्जौ ग्।१२.४।

तृतीयस्य सौरभकं र् नौ भ्गौ।१२.५।

ललितं नौ सौ।१२.६।

उपस्थितप्रचुपितं पृथगाद्यं म् सौ ज्भौ गौ, स्नौ ज्-रौ ग्, नौ स्, नौ न् जयौ ।१२.७।

वर्धमानं तृतीयेनौस्नौन्सौ।१२.८।

शुद्धविराळृषभंतज्राः।१२.९।

अर्धे।१२.१०।

उपचित्रकं सौ स्लो ग्, भ्गौ ग्।१२.११

द्रुतमध्या भौ भ्गौ ग्, न्जौ ज्यौ।१२.१२।

वेगवती सौ स्गौ भौ भ्गौ ग्।१२.१३।

भद्रविराट्त्जौ गौं, म्सौ ज्गौ ग्।१२.१४।

केतुमती स्जौ स्गौ भ्रौ न्गौ ग्।१२.१५।

आख्यानकी तौ ज्गौ ग्, ज्तौ ज्गौग्।१२.१६।

विपरीताख्यानकी ज्तौ ज्गौ ग्, तौ ज्गौ ग्।१२.१७।

हरिणप्लुता सौ स्लौ ग्, न्भौ भ्रौ।१२.१८।

अपरवक्त्रं नौ र्-लौ ग्, न्-जौ ज्-रौ।१२.१९।

पुष्पिताग्रा नौ यौं, न्जौ ज्रौ ग्।।।१२.२०।

यवमती जौं जौं ञौ ञौ ग्। १३.१।

शिखैकान्नत्रिंशदेकत्रिंशदन्ते ग्। १३.२।

खञा महत्ययुजीति।।।१३.३।

---

www.ayurve

यतिर्विच्छेदः।१४.१।

तनुमध्या त्यौ।१४.२।

कुमारललिता ज्सौ ग्।१४.३।

माणवकाक्रीडितकं भ्तौ ल्गौ।१४.४।

चित्रपदा भौ गौ।१४.५।

विद्युन्माला मौ गौ।१४.६।

भुजगशिशुभृता नौ म्।१४.७।

हलमुखीर्नौ स्।१४.८।

शुद्धविराड् म्-सौ ज्गौ।१४.९।

पणवो न्नौ य्गौ।१४.१०।

रुक्मवती भ्मौ स्गौ।१४.११।

मयूरसारिणी र्जौ र्गौ।१४.१२।

मत्ता म्भौ स्गौ।१४.१३।

उपस्थिता त्जौ ज्गौ।१४.१४।

एकरूपं सौ ज्गौ ग्।१४.१५।

इन्द्रवज्रा तौ ज्गौ ग्।१४.१६।

उपेन्द्रवज्रा ज्तौ ज्गौ ग्।१४.१७।

वाद्यन्ता उपजातयः।१४.१८।

दोधकं भौ भ्गौ ग्।१४.१९।

शालिनी म्तौ त्गौ ग् समुद्रऋषयः।।।१४.२०।

वातोर्मी म्भौ त्गौ ग्च।१५.१।

भ्रमरविलसितं म्भौ न्-लौ ग्।१५.२।

रथोद्धता नौं र्लौं ग्।१५.३।

स्वागता नौं भ्गौ ग्।१५.४।

वृन्ता नौ स्रौ ग्।१५.५।

श्येनी जौं र्लौं ग्।१५.६।

जगती।१५.७।

वंशस्था ज्तौ ज्रौ।१५.८।

इन्द्रवंशा तौ ज्रौ।१५.९।

द्रुतविलम्बितं न्भौ भ्रौ।१५.१०।

तोटकं सः।१५.११।

पुटो नौ म्यौ वसुसमुद्राः।१५.१२।

जलोद्धतगतिर्ज्सौं ज्सौ रसर्तवः।१५.१३।

भुजङ्गप्रयातं यः।१५.१४।

स्रग्विणी रः।१५.१५।

प्रमिताक्षरा स्जौ सौ।१५.१६।

वैश्वदेवी मौ याविन्द्रियऋषयः।१५.१७।

नवमालिनी न्जौ भ्याविति॥।१५.१८।

प्रहर्षिणी म्नौ ज्रौ ग् त्रिकदशकौ।१६.१।

रुचिरा ज्भौ स्जौ ग् चतुर्नवकौ।१६.२।

मत्तमयूरं म्तौ य्सौ ग् समुद्रनवकौ ।१६.३।

असम्बाधा म्तौ न्सौ गाविन्द्रियनवकौ।१६.४।

अपराजिता नौ सौं ल्गौ स्वरऋषयः।१६.५।

प्रहरणकलिता नौ भ्नौ ल्गौ च।१६.६।

वसन्ततिलका त्-भौ जौ गौ।१६.७।

सिंहोन्नता काश्यपस्य।१६.८।

उद्धर्षिणी सैतवस्य।१६.९।

चन्द्रावर्ता नौ नौ स्।१६.१०।

मालर्तुनवकौ चेत्।१६.११।

मणिगुणनिकरो वस्वृषयः।१६.१२।

मालिनी नौ म्यौ य्च।१६.१३।

ऋषभगजविलसितं भ्रौ नौ न्गौ स्वरनवकौ।१६.१४।

हरिणी न्सौ म्रौ स्लौ गृतुसमुद्रऋषयः।१६.१५।

पृथ्वी ज्सौ ज्सौ य्लौ ग् वसुनवकौ।१६.१६।

वंशपत्रपतितं भ्रौ न्भौ न्-लौ ग् दिगृषयः।१६.१७।

मन्दाक्रान्ता म्भौ न्तौ द्वौ ग् समुद्रर्तुस्वराः।१६.१८।

शिखरिणी य्मौ भ्लौ गृतुरुद्राः।१६.१९।

कुसुमितलतावेल्लिता म्तौ न्यौ याविन्द्रियर्तुस्वराः।।।१६.२०।

शार्दूलविक्रीडितं म्सौ ज्सौ तौ गादित्यऋषयः।१७.१।

सुवदना म्नौ भ्नौ य्भौ ल्गौ स्वरऋषिरसाः।१७.२।

ग्लिति वृत्तम्।१७.३।

स्रग्धरा म्रौ भ्नौ यौ य्त्रिस्सप्तकाः।१७.४।

मद्रकं भ्रौ त्रौ त्रौ न्गौ दिगादित्याः।१७.५।

अश्वललितं न्जौ भ्जौ भ्जौ भ्लौ ग्रुद्रादित्याः।१७.६।

मत्ताक्रीडा मौ ह्लौ नौ न्-लौ ग, वसुपञ्चदशकौ।१७.७।

तन्वी भ्तौ न्सौ भौ न्यौ द्विरादित्याः।१७.८।

क्रौञ्चपदा भ्मौ स्भौ नौ नौ ग्, भूतेन्द्रियवस्वृषयः।१७.९।

भुजङ्गविजृम्भितं मौ ह्लौ नौ सौं ल्गौ वसुरुद्रऋषयः।१७.१०।

अपवाहको म्नौ नौ नौ न्सौ गौ नवकर्तुरसेन्द्रियाणि।१७.११।

दण्डको नौ रः।१७.१२।

प्रथमश्चण्डवृष्टिप्रयातः।१७.१३।

अन्यत्र रातमाण्डव्याभ्याम्।१७.१४।

शेषःप्रचित इति।।।१७.१५।

अत्रानुक्तं गाथा।१८.१।

द्वि कौ ग्-लौ।१८.२।

मिश्रौ च।१८.३।

पृथग्ला मिश्राः।१८.४।

वसवस्त्रिकाः।१८.५।

लर्धे।१८.६।

सैके ग्।१८.७।

प्रतिलोमगुणं द्विर्लाद्यम्।१८.८।

ततोग्येकं जह्यात्।१८.९।

द्विरर्धे।१८.१०।

रूपं शुन्यम्।१८.११।

द्विःशून्ये।१८.१२।

तावदर्धे तद्गुणितम्।१८.१३।

द्विर्ब्दूनम्।१८.१४।

तदन्तानाम्।१८.१५।

एकोनेद्धा।१८.१६।

परेपूर्णम्

परेपूर्णमिति।।।१८.१७।

1. **Āyurveda books**
    a. Astanga Hridayam
    b. Astanga Samgraha
    c. Charaka Samhita
    d. Madhava nidanam
    e. Sarangadhara Samhita
    f. Sushruta Samhita
2. **Contemporary books**
    a. Amarakosa
    b. Ashtadhyayi
    c. Garbhopanisat
    d. Gheranda Samhita
    e. Goraksa Shataka
    f. Hatyoga pradipika
    g. Kamasutra
3. **Other books**
    a. **Darshana**
    b. **Vyakarana**
    c. **Upanishadas**

www.ayurvedah.in

Other publications (Hard copy) Published or Marketed by aarsha, Jaipur and available on www.ayurveda.in

1. Chanda in Ayurveda Samhita :student edition **Rs 175** (original price Rs 300)
2. madhavaniadna Avavodha 2 :student edition **Rs 300** (original price Rs 495)
3. madhavanidana Anusthana I :student edition **Rs 600** (original price Rs 1095)
4. madhavanidana Anusthana II :student edition **Rs 700** (original price Rs 1195)
5. Madhavanidana patha :student edition **Rs 500** (original price Rs 895)
6. AstangaHridaya pathika Rs 150/- (original price Rs 295)

aarsha, jaipur
Plot no. 4, Khandelwal nagar Extn,
Near Premnagar pulia, Agra Road,
Jaipur- 302031, Rajasthan

www.ayurvedah.in